FINAL PAPER

बापदादा यह फाइनल पेपर पहले से ही अनाउंस (घोषित) कर रहे हैं - हर समय निर्बंधन। एक second में सोचा और अशरीरी हो गए। एक सेकंड में इस चोले को छोड़ सकें। सिटी बजे और अपनी निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाएं, इसके लिए सदा अपने को एवररेडी बनाना पड़े। ऐसी पावरफुल स्टेज हो जो एक सेकंड में कोई भी वायुमण्डल को, माया की कोई भी समस्या को ख़त्म कर दें।

फाइनल पेपर में आश्चर्य जनक बातें क्वेश्चन के रूप मैं आएँगी, तब तो पास और फेल हो सकेंगे। ऐसी पेपर आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। परिस्थितयाँ खिचेंगी। न चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न न हो - यही तो पेपर हैं। नथिंग न्यू - यह पाठ पक्का हो। साक्षी की स्टेज हो। ऐसे समय संकल्पों पे ब्रेक पपवरफुल नहीं होगा तो पास न हो सकेंगे। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जिस समय विस्तार में बुद्धि बिखरी हुई हो और उसी समय स्टॉप की प्रैक्टिस करो। संकल्प कंट्रोल में हों। समेटने की शक्ति आव्यशक हैं उस समय। अपने देह अभिमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्थितयों के संकल्प को, क्या होगा ऐसे हलचल के संकल्प को, शरीर और शरीर के सर्व संपर्क की वस्तुओं को भी वा अपनी आवश्यकता के साधनो की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। घर परमधाम जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी भी संकल्प का विस्तार न हो। बस यही संकल्प हो की अब अपने घर गया की गया। शरीर का कोई भी सम्बन्ध व संपर्क बुद्धि को निचे न ला सके।

अपने को एक सेकंड में साकारी वतन से पार निराकारी परमधाम के निवासी बना सकते हो? ज़रा भी हलचल भी निकालनी हैं अब। इस लिए एकरस, एकाग्रह, एकांत (एक बाप के अंत में खोये रहना,मगन रहना) स्थिति में रहने का अभ्यास निरंतर हो। बाप की याद में सदा मगन नहीं तो ज़रूर कोई विघ्न हैं। शरीर से बुद्धि detach हो, संकल्पों से मुक्त, कर्मइन्द्रियों के बंधन से मुक्त, सर्व लौकिक अलौकिक संपर्क से बुद्धि detach, स्वयं और अन्य आत्माओं के स्वाभाव संस्कारों के प्रभाव से मुक्त, प्रकृति, साधनों, सेवा व कर्म के बंधनो से मुक्त, वातावरण के vibrations के प्रभाव से दूर हों। अगर ज़रा भी अपनी देह व देहधारीको देखा तो बाप तक, अपनी मंज़िल तक पहुंच नहीं पाएंगे।

पेपर अचानक का होगा। जब बिलकुल निश्चिन्त होंगे तब होगा फाइनल पेपर। फाइनल पेपर में क्वेश्चन वही आएगा जिस शक्ति की कमी हैं।

विनाश के समय प्रकृति विकराल रूप धारण करेगी - पांचो तत्व चारों ही दिशाओं में एक ही समय अपना विकराल रूप दिखाएंगे। पांच विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर फुल फ़ोर्स का अंतिम का वार अति सूक्ष्म रूप में लगाएंगे। हर प्रकार के आधार छूट जायेंगे - सिर्फ एक बाप का आधार ही रहेगा। उस समय ज्ञान और योग का आधार चाहिए। जब हर समय अकालमूर्त (अशरीरीपन का अनुभव) बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ मास्टर महाकाल स्वरूप में स्थित होंगे, तब ही प्रकृति के विकराल रूप का सामना कर सकेंगे। ज़रा सा भी देह भान होगा तो अकाले मृत्यु के सामने अचानक के वार में हार खिला देगा। कंबाइंड रूप शिवशक्ति की स्टेज हो।
विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिए लाइट हाउस होना पड़े। चलते फिरते अपना यह फरिश्ता लाइट का रूप अनुभव होना चाहिए। यह प्रैक्टिस करनी है। शरीर बिलकुल भूल जाये , अगर कोई काम भी करना है तो निमित्त ाकारी लाइट रूप धारण कर करना है। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जाएगी, फिर कर्म भोग समाप्त हो जायेगा। देह की स्मृति से गायब हो जायेंगे। ऐसे हलचल के समय श्रीमत कैसे मिलेगी? जब बिलकुल निर्विकारी पाप रहित स्टेज होगी तब ही श्रीमत ले सकेंगे बाप द्वारा ।ज़रा अंश के भी अंश मात्रा विकार न हो अंत के समय। तब ही प्राकृती और पांच विकारों की अंतिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे।